कृषि किरण अंक-9, जून 2020: पृष्ठ: 20-21
http://saaer.org.in

कृषि उद्यानिकी पद्धतियां एवं उनके लाभ

अक्षित, अमित धनखड़ और सुनील कुमार
सस्य विभाग, कृषि महाविद्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा *कृषि विश्वविद्यालय, हिसार*, हरियाणा

आज की बढ़ती हुई मानव एवं पशु संख्या को ईंधन, चारा, खाद्यान्न, फल, सब्जी इत्यादि की आपूर्ति के लिये घोर संकट का सामाना करना पड़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में कृषि उद्यानिकी ही एक ऐसी पध्दति है, जो उपर्युक्त समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। कृषि उद्यानिकी समय की मांग है। अत: कृषकों के लिये इसे अपनाना नितांत आवश्यक है। खेत के पास पड़ी बंजर, ऊसर एवं बीहड़ भूमि में कृषि उद्यानिकी को अपनाने से केवल उनका सदुपयोग होगा साथ ही खाद्यान्न, सब्जियां, चारा, खाद, गोंद आदि अनेक वस्तुएं उपलब्ध होगी । साथ ही रोजगार के अवसरों में वृध्दि होगी और पर्यावरण में निश्चित रूप से सुधार होगा।

कृषि उद्यानिकी पद्धतियों के प्रकार हैं:

1) कृषि उद्यानिकी पध्दति: आर्थिक दृष्टि एवं पर्यावरण दृष्टि से यह सबसे महत्वपूर्ण एवं लाभकारी पध्दति है। इस पध्दति के अन्तर्गत शुष्क भूमि में अनार, अमरूद, बेर, किन्नू, कागजी नींबू, मौसमी, 6-6 मीटर की दूरी ओर आम, आंवला, जामुन, बेल को 8-10 मीटर की दूरी पर लगाकर उनके बीच में बैंगन, टमाटर, भिण्डी, फूलगोभी, तोरई, लौकी, सीताफल, करेला आदि सब्जियां और धनिया, मिर्च, अदरक, हल्दी, जीरा, सौंफ, अजवाइन आदि मसालों की फसलें सुगमता से ली जा सकती हैं । इससे कृषकों को फल के साथ-साथ अन्य फसलों से भी उत्पादन मिल जाता है, जिससे कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा । साथ ही फल वृक्षों की काट-छांट से जलाऊ लकड़ी और पत्तियों द्वारा चारा भी उपलब्ध हो जाता है।

2) कृषि-उद्यानिकी-चरागाह पध्दति: इस पध्दति में आंवला, अमरूद, शरीफा, बेल, बेर के साथ-साथ घास एवं दलहनी फसले जैसे- मूंगफली, मूंग, उड़द, लोबिया, ग्वार इत्यादि को उगाया जाता है। इस पध्दति से फल, चारा, दाल इत्यादि की प्राप्ति होती है, साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति में भी वृध्दि हो जाती है।

3) कृषि-वन-उद्यानिकी पध्दति: यह एक उपयोगी पध्दति है, क्योंकि इसमें मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार के बहुउद्देश्यीय वृक्ष उगाते

हैं और उनके बीच में उपलब्ध भूमि पर फल वृक्षों के साथ-साथ फसलें भी उगाते हैं। इस पध्दति से खाद्यान्न, चारा और फल भी प्राप्त् होते हैं।

4) उद्यान-चारा पध्दति: यह पध्दति उन स्थानों के लिये अत्यन्त उपयोगी है जहां सिंचाई के साधन उपलब्ध न हों और श्रमिकों की समस्या भी हो। इस पध्दति में भूमि में कठोर प्रवृत्ति के वृक्ष, जैसे-बेर, बेल, अमरूद, जामुन, शरीफा, आंवला इत्यादि उगाकर वृक्षों के बीच में घांस जैसे-अंजन, हाथी घांस, मार्बल के साथ-साथ दलहनी चारे जैसे स्टाइलो, क्लाइटोरिया इत्यादि लगाते हैं। इस पध्दति से फल एवं घांस भी प्राप्त् होती है और साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति में वृध्दि होती है। इसके अतिरिक्त भूमि एवं जल संरक्षण भी होता है। भूमि में कार्बनिक पदाथो की वृध्दि भी होती है।

कृषि उद्यानिकी के लाभ:

(1) कृषि उद्यानिकी को सुनिश्चित कर खाद्यान्न को बढ़ाया जा सकता है।

(2) बहु उद्देश्यीय वृक्षों से ईंधन, चारा व फलियां, इमारती लकड़ी, रेशा, गोंद, खाद आदि प्राप्त् होते हैं।

(3) कृषि उद्यानिकी के द्वारा भूमि कटाव की रोकथाम की जा सकती है और भू एवं जल संरक्षण कर मृदा की उर्वरा शक्ति में वृध्दि कर सकते हैं।

(4) कृषि एवं उद्यानिकी आधारित कुटीर एवं मध्यम उद्योगों को बढ़ावा मिलता है।

(5) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में इस पध्दति का महत्वपूर्ण योगदान है।

(6) कृषि उद्यानिकी में जोखिम कम है। सूखा पड़ने पर भी बहु उद्देशीय फलों से कुछ न कुछ उपज प्राप्त् हो जाती है।

(7) कृषि उद्यानिकी पध्दति से मृदा-तापमान विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में बढ़ने से रोका जा सकता है जिससे मृदा के अंदर पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट होने से बचाया जा सकता है, जो हमारी फसलों के उत्पादन बढ़ाने में सहायक होते है।

(8) ग्रामीण जनता की आय, रहन-सहन और खान-पान में सुधार होता है।